साई संस्कृति

श्री सत्य साई विद्यानिकेतन, नवसारी

साई संस्कृति

SRI SATHYA SAI VIDYANIKETAN
NAVSARI
सत्य वद धर्मं चर

श्री सत्य साई विद्यानिकेतन

गणेश वड सिसोद्रा, ने.हां.–८, नवसारी.

Website : www.sssvn.edu.in

Publisher :	**प्रकाशक :**
Sri Sathya Sai Vidyaniketan	**श्री सत्य साई विद्यानिकेतन**
Ganesh Vad, Sisodara	गणेश वड सिसोद्रा,
N.H.No -8 Navsari.	ने हा. नं -८, नवसारी
Ph : 02637-291030, 265500	दूरभाष : ०२६३७-२९१०३०, २६५५००
Website : www.sssvn.edu.in	वेबसाईट : www.sssvn.edu.in
Editors :	**संपादक :**
Akhilesh Kumar Tiwari	**अखिलेश कुमार तिवारी**
(Hindi Co-Ordinator)	(हिन्दी प्रभारी)
Hindi Teacher - (Higher Sec.)	हिन्दी शिक्षक - (माध्यमिक)
Yogesh. A. Patel	**योगेश. ए. पटेल**
Hindi Teacher - (Pre Primary)	हिन्दी शिक्षक - (पूर्व माध्यमिक)
Sri Sathya Sai Vidyaniketan	श्री सत्य साई विद्यानिकेतन,
Navsari.	नवसारी
Support :	**सहायक मंडल :**
Hindi Division	हिन्दी विभाग
Sri Sathya Sai Vidyaniketan	श्री सत्य साई विद्यानिकेतन,
Navsari.	नवसारी
Copy Right :	**सर्वाधिकार सुरक्षित :**
Sri Sathya Sai Vidyaniketan	श्री सत्य साई विद्यानिकेतन,
Navsari, Gujarat	नवसारी, गुजरात.
Fourth Edition :	**चतुर्थ संस्करण :**
Diwali 23 November, 2014	दीपावली, २३ नवम्बर, २०१४
Price : Rs. 95/-	**मूल्य :** ९५/- रु
Graphics & Printers :	**ग्राफिक्स एवम् प्रिन्टर्स :**
Rangoli Graphics, Navsari	रंगोली ग्राफिक्स, नवसारी
Ph : (02637) 283183	फोन : (०२६३७) २८३१८३
rangoligraphics83@gmail.com	rangoligraphics83@gmail.com

समर्पण

भगवान श्री सत्य साई बाबा के
चरण कमल में समर्पित

अर्पण

मानव जाति के अभ्युदय के बाद जो सर्वप्रथम समस्या उत्पन्न हुई थी। वो थी आपस में भावना का आदान प्रदान पहले इंगित में भावना का आदान प्रदान होता था, कुछ समय के बाद बोलने के लिए एक भाषा की आवश्यक्ता उत्पन्न हुई। तत्पश्चात् अनेक प्रादेशिक भाषाओं का सृजन हुआ। हमारे देश में जब आज़ादी का संग्राम चरम सीमा पर था। तब सबको एक सूत्र में बाँधने की एक समस्या खड़ी हुई थी, हिन्दी भाषा का व्यवहार वहीं से करीब शुरु हुआ। रही बात हिन्दी के प्रचार एवं प्रसार की अनेक दिग्गज कवि, लेखक एवं भाषा के विद्वानों ने अपने दम पर राज भाषा हिन्दी को आगे लाने में अमूल्य योगदान प्रदान किया था। परंतु आज़ादी के बाद हिन्दी भाषा का उपयोग केवल कुछ राज्यों तक ही सीमित हो गया है और विश्वविद्यालयों के माध्यम से कैद हो गया है। अतः आज की आवश्यक्ता है कि देश की भाषा हिन्दी के भविष्य के बारे में सोचने का और कुछ करने का।

श्री सत्य साई विद्यानिकेतन जो कि देश की उन्नति एवं प्रगति के लिए कटिबद्ध है, हिन्दी भाषा के प्रचार का कार्य आठ सालों से कर रहा है। उसी प्रकरण में राज्यस्तरीय काव्य लेखन, वाद-विवाद प्रतियोगिता, दोहा लेखन कार्यक्रमों का लगातार आयोजन करता आ रहा है। इस वर्ष सितंबर माह में काव्य लेखन प्रतियोगिता में लिखी गई समस्त कविताओं का संग्रह साई संस्कृति है। जो कि हमारे चतुर्थ संस्करण के रूप में आपके समक्ष अभिभूत होने वाली है। यह हमारे विद्यालय परिवार और हम सबके लिए एक खुशी का अवसर है। मैं सत्य साई बाबा से प्रार्थना करता हूँ कि वे हम सबको इसी प्रकार देश प्रेम, देश भक्ति एवं देश सेवा का अवसर देते रहे और हम सबको देश भाषा की प्रगति के लिए काम करने की प्रेरणा प्रदान करते रहें। मैं तहे दिल से समस्त विद्यालयों के छात्र – छात्राओं, प्रधानाचार्यों, प्रबंधक समिति, हमारे विद्यालय के समस्त सदस्य वृंद एवं सृजनात्मक कार्य में संलग्न छात्र-छात्राओं एवं शिक्षकों का शुक्रिया अदा करता हूँ। भगवान से हमारी यही प्रार्थना है कि इस संकलन में संकलित कविताएँ सबके द्वारा आत्मसात हो। आपके अभिमत एवं उपयोगी मार्गदर्शन की अपेक्षा में।

साई राम...

बी.एन.बिस्वाल

(प्राचार्य)

श्री सत्य साई विद्यानिकेतन, नवसारी

दिनांक : १०-०१-२०१५

अनुक्रमणिका

क्रमांक	कविता का नाम	पृष्ठ संख्या
१	चरित्रवान व्यक्ति	१
२	चरित्रवान व्यक्ति	२
३	चरित्रवान व्यक्ति	४
४	चरित्रवान व्यक्ति	५
५	चरित्रवान व्यक्ति	६
६	चरित्रवान व्यक्ति	७
७	चरित्रवान व्यक्ति राष्ट्र की वास्तविक संपदा	९
८	ईश्वर के लिए समय	११
९	सपना	१२
१०	चरित्रवान व्यक्ति	१३
११	चरित्रवान व्यक्ति	१४
१२	चरित्रवान व्यक्ति	१५
१३	चरित्रवान व्यक्ति	१६
१४	चरित्रवान व्यक्ति	१७
१५	चरित्रवान व्यक्ति	१८
१६	चरित्रवान व्यक्ति	२०
१७	चरित्रवानव्यक्ति	२१
१८	चरित्रवानव्यक्ति	२२
१९	चरित्रवानव्यक्ति	२३
२०	चरित्रवानव्यक्ति	२४
२१	आदमी के रुप - रंग	२५
२२	मानव प्रेम	२६
२३	ईश्वर आराधना	२७
२४	प्रार्थना	२८
२५	ईश्वर आराधना	२९

अनुक्रमणिका

क्रमांक	कविता का नाम	पृष्ठ संख्या
२६	ईश्वर आराधना	३०
२७	प्रार्थना	३१
२८	ईश्वर आराधना	३२
२९	ईश्वर आराधना	३३
३०	चरित्रवान व्यक्ति	३४
३१	चरित्रवान व्यक्ति	३६
३२	चरित्रवान व्यक्ति	३७
३३	मानव प्रेम	३८
३४	मानव प्रेम	४०
३५	मानव प्रेम	४१
३६	मानव प्रेम	४२
३७	मानव प्रेम	४३
३८	मानव प्रेम	४४
३९	मानव प्रेम की स्थिति	४५
४०	ईश्वर आराधना	४६
४१	चरित्रवान व्यक्ति	४७
४२	चरित्रवान व्यक्ति	४९
४३	चरित्रवान व्यक्ति	५०
४४	चरित्रवान व्यक्ति राष्ट्र की वास्तविक संपदा	५१
४५	चरित्रवान व्यक्ति राष्ट्र की वास्तविक संपदा	५२
४६	चरित्रवान व्यक्ति की विशेषताएँ	५४
४७	हिन्दी मेरी पहचान	५५
४८	भारतीय संस्कृति की महिमा	५६
४९	हिन्दी भाषा का भविष्य	५७

चरित्रवान व्यक्ति

मेरे जीवन की किताब से जाने कब,
चरित्र का पन्ना फट कर निकल गया जब,
जब से मैंने होश सँभाला,
तब से मैं उसे ना तलाश चाहा ।
भटकता रहा उसी खोज में गलियों में,
तब ढूढँता रहा उसे विभिन्न आकृतियों में,
बौराया फिरता रहा हर पल,
न आज मिली गुमे बीते कल ।
मैं रो-रो कर बैठा हार कर,
निकालना चाहा जिसका डर,
फिर एक दिन जब आया,
जानी पहचानी शक्लों को पाया,
शब्दों ने दी जोर से आहट,
पास गया तो मिली मुझे चाहत,
था शब्द उसी चरित्र-वाले पन्ने का,
देखकर स्वाद आया मीठे गन्ने का ।
दूसरे पल हो गया मैं उदास,
बन गई किताब और थी कुछ खास,
कैसे जोड़ पाऊँगा उसे फिर,
अपने जीवन का था अनमोल यह तीर
अगर रख सको तो हूँ मैं निशानी,
खो दो तो बन जाऊँगी मैं कहानी,
बनी है जिससे यह सारी दुनिया,
चरित्र हूँ मैं बाटूँगा मैं सारी खुशियाँ ।

नील. पी. पटेल
श्री सत्य साई विद्यानिकेतन, नवसारी

चरित्रवान व्यक्ति

जिसमें स्वदेश का मान भरा,
आज़ादी का अभिमान भरा,
जो निर्भय पथ पर बढ़ आए,
जो महाप्रलय में मुस्काए,
जो अंतिम दम तक रहे डटे,
दे दिए प्राण,पर नहीं हटे,
जो देश-राष्ट्र की बेदी पर,
देकर मस्तक हो गए अमर,
दे रक्त-तिलक भारत ललाट,
उसको मेरा पहला प्रणाम,
और हो जिसका चरित्र बलवान ।
संकटों से जो घबराता नहीं,
आप आए देख छिप जाता नहीं,
जिसनें काम पूरा किया,
काम करके व्यर्थ पछताया नहीं,
हो असंभव कुछ नहीं उसके लिए,
जो समाज प्रेम के लिए जिए,
हो सरल या कठिन हो उसके लिए राह,
और हो सबसे उसका वास्ता,
जो बन जाए एक अच्छा चरित्रवान व्यक्ति एक दिन,
और हो सत्य, धर्म, शांति, प्रेम, अहिंसा के दिन
उसको मेरा पहला सम्मान,
है जिसका चरित्र बलवान ।
फिर वे जो आँधी बन भीषण,
कर रहे आज दुश्मन का रण,
बाणों के पवित्र-संधान बने,
जो ज्वाला मुख-हिमवान बने,

है टूट रहे रिपु के गढ़ पर,
बाधाओं के पर्वत चढकर,
जो न्याय-नीति को अर्पित है,
भारत के लिए समर्पित है,
कीर्तित जिससे यह धारा-धाम,
हो जिसका चरित्र बलवान ।
भविष्य-द्वारा मुक्त से स्वतंत्र भाव से जो चले,
मनुष्य-बन मनुष्य से जो गले मिले चले,
समान भाव के प्रकाशवान सूर्य से जो तले,
समान रूप गंध से फूल-फूल से जो खिले चले,
प्रेम की मर्यादा जो समझे,
अनुशासन ही जीवन का गुरुमंत्र जो समझे,
सत्य ही रखता जहाँ पर सब कुछ उसको,
नहीं करे जो तेरा-मेरा
किसी को और ना करे वसन हीन,
निवारण परिचय अंतर को,
उनको मेरा पहला सम्मान,
हो जिसका चरित्र बलवान ।

दीप. आर. पटेल
श्री सत्य साई विद्यानिकेतन, नवसारी

चरित्रवान व्यक्ति

दोहरे चरित्र का बन रहा इन्सान हैं,
ऊपर साधू अन्दर से बेईमान है ।
बदल बदल कर अपने मूखौटों से,
अपने चरित्र का कर रहा निर्माण है।
वो आईना है,हर आदमी का,
जो हमको कहता है,कौन कितना महान है।
दुष्चरित्र के कारण इस लोक में क्या,
परलोक में भी नहीं होता कल्याण है ।
नज़रिया हर आदमी का है अलग-अलग
जैसी दृष्टी वैसी सृष्टि,जैसा जिसका ध्यान है ।
जग मे होगा चरित्र उसका ऊँचा,
गुरु वचनो पर होता जो कुर्बान है ।
चरित्र का बन रहा जो इन्सान है,
वह आधा आदमी और आधा भगवान है ।
व्यक्ति के अंदर हो गुण शक्ति,
तभी तो वो कहलाता है चरित्रवान व्यक्ति ।
नदियाँ न पिए कभी अपना जल
वृक्ष न खाँए कभी अपना फल ।
अपने तन का मन का और धन का
औरों को दे जो दान रे ।
तभी तो कह-लाता है
चरित्रवान व्यक्ति चरित्रवान व्यक्ति रे ।

अक्षित आर शर्मा
श्री सत्य साई विद्यानिकेतन, नवसारी

चरित्रवान व्यक्ति

जग मैं कितने वैज्ञानिक कितने नीतिकार
वक्ता, पंडित, ज्ञानी-ध्यानी, इतिहासकार
दार्शनिक हजारों और सुधारक घर-घर में,
ये राजनीति के पंड़े-मीलों की कतार !
क्या यह है चरित्रवान व्यक्ति का आधार ?
रॉकेट से हमने यह उच्च नभ जीत लिया
बिजली के पंखो में बंद समीर किया,
कर लिया काल को कैद, घड़ी के डायल में,
रेडियो बना वाणी पर पाया स्वाधिकार !
क्या यह है चरित्रवान व्यक्ति का प्रमाण ?
हिमगिरी का मस्तक फोड़ दिया अभियानों सें
दी चीर समुद्रों की छाती जलयानों सें
दी बाँध बल्ब में ज्योति सूर्य शशि तारों की
रे, धन्य मनुज की बुद्धि,बुद्धि का चमत्कार !
क्या यह है चरित्रवान व्यक्ति का आधार ?
हमेशा है दूसरों की भलाई के लिए तैयार
जो अच्छाई के लिए जान देने को है तैयार
जिस के दिल में है दया की भावना
और जिस दिल में है मानवता
वही है चरित्रवान व्यक्ति का आधार ।

ब्रज.के .देसाई
श्री सत्य साई विद्यानिकेतन, नवसारी

चरित्रवान व्यक्ति

चरित्रवान कौन है ?
वह जो सच्चाई की राह चले
पैर में काँटे चुभे
पर सच की राह न भूले
रहे वह निडर
निडर हो बुराई का दमन कर
बढ़ता चले चिर निरंतर
सद-विचार, सत-कर्म करे सदा
हो वह दयावान
हो उसमे निच्छल, निःस्वार्थ सेवा भाव विद्यमान
कमल सा कोमल हो उसका हृदय
वाणी में मधु सी मिठास
दृढ़ता हो उसमें लौह स्तंभ सी
व्यवहार कुशलता व नम्रता का दे प्रमाण
आकाश में ध्रुव तारे के समान
है चरित्रवान की यही पहचान ।

उत्कर्ष.झा
श्री सत्य साई विद्यानिकेतन, नवसारी

चरित्रवान व्यक्ति

सात्विक हो जो इन्सान,
जो परेशानी में भी न हो विचलित ।
जिसमें कर्तव्य की हो भावना,
स्वप्नपूर्ति के लिए करे जो साधना ।
ज़ो अन्याय करने से ही हो परे
और वह जो सबको खुश रखे ।
मुश्किल में भी जो धैर्यवान रहे,
बड़ो व स्त्रियों का सम्मान करे ।
जिस में हो अलौकिक प्रकाश,
जो न करे किसी का उपहास।
जिस के स्वभाव में हो परोपकार
ज़ो दूर करे समाज का अंधकार ।
जो चलता सत्य के पथ पर,
और अपने अधिकार के लिए जाए लड़ ।
जो करता हो दूसरों की सहायता
जिसके स्वभाव में हो विनम्रता ।
जो करे निःस्वार्थ मैत्री,
जिससे हो समाज की बढ़ोतरी ।
,साफ हो इन्सान ऐसा जिसका दिल
नादानियों को करे जो माफ ।
ज़ो जरुरतमंद की करे सहायता,
और समाज की गंदगी का करे हरण ।

बनना चाहे जो देश की शान,
जो समाज के विकास की करे मन में आन।
जो चाहे करना सबका कल्याण,
और दे वह महानता का प्रमाण ।
जो करता इन आदर्शों का अनुसरण,
वह ही कहलाता चरित्रवान ।
महात्मा गाँधी जैसे अहिंसक,
स्वामी विवेकानंद जैसे देशभक्त ।
मदर टेरेसा सी समाजसेवी व पटेल जैसे बुध्दिमान,
ये सब कहलाते चरित्रवान ।

जाह्नवी वर्मा
न्यू एरा सीनियर सेकेन्डरी स्कूल, बड़ौदा

चरित्रवान व्यक्ति राष्ट्र की वास्तविक संपदा

एक बार भारत माँ मेरे सपने में आई,
कहा पूरी करो मेरे लाड़ प्यार की भरपाई ।
पूछा मैंने होगा यह कैसे ?
कहा उन्होंने अपने चरित्र को बदलोगे कैसे ?
पूरी बात तो समझ न पाई,
सोच में पड़ गई कैसे करूँ भरपाई !
सुबह उठी तो बहुत से ख्याल आए,
पर सबसे पहले चरित्र कैसे बदला जाए ।
जवाब मिला कुछ ऐसा कर निर्मित,
तो चिरत्र विचारों से ही होता है,
तो क्यों न विचारों को ही बदला जाए ।
परतुं विचारों से ही बदलेगा सब कुछ !
जी नहीं , संगति का भी तो असर है कुछ।
फिर और एक ख्याल आया मन में,
कि कर्म का ही तो असर है सब पर ।
तो क्यों ना कर्म से शुरुआत की जाए,
और देश को सम्मान दिलाया जाए ।
यह बदलाव न होगा कोई साधरण सा,
परंतु बन जाएगी देश की वास्तविक संपदा ।
इसी संपदा से लाभ होगा हमको,
पर यह बदलाव क्यों नहीं मंजूर सब को
अपने चरित्र को मानते हैं सर्वश्रेष्ठ हम,

इस कारण बदलाव चाहते हैं हम ।
पर क्या आपको जानना नहीं कि चरित्र होता है क्या ?
चरित्र होती है सच्चाई की चाह ।
सिर्फ सच्चाई की चाह रखना ही नहीं ,
इमानदारी की राह पे हिम्मत से चलना भी,
होती है चरित्र की विशेषता ।
तो आओ सब मिलके अपने चरित्र को सुधारें,
क्योंकि हम ही तो हैं भारत माँ के दुलारे ।

तुषारिक रंजन
ब्राइट डे स्कूल, बड़ौदा

ईश्वर के लिए समय

हर खुशी है यहाँ लोगों के पास,
मगर हँसने के लिए समय नही ।।

ईश्वर की तरह-तरह की है मूर्तियाँ,
मगर ईश्वर को भजने का समय नहीं ।।

अपना कोई मर गया,
मगर शोक का समय नही ।।

माँ-बाप से दो शब्द कहने का,
सुनने का भी समय नही ।।

आज के आधुनिक आदमी के पास,
खुद को याद करने का भी समय नही ।।

आर्य. जैसवाल
श्री सत्य साई विद्यानिकेतन, नवसारी

सपना

दिन रात देखा सपना
कभी करेंगे काम अनोखा
जग में होगा नाम
प्यार से बुलाएँगे सब
इसी ख्वाहिश में दिन बीते
सपना रहा ही सपना बना
आज पता लगा है ।
नाम कमाना नहीं आशा
देखा जो सपना करेंगे पूरा हम
करेंगे खूब मेहनत हम
एक दिन खूब मान मिलेगा।
नाम होगा जग में ऊँचा
तब रहेगा न सपना अधूरा।
खुश होगी आँखे मेरी
बहेंगे आँसू खुशी के
बनकर प्यार के मोती
तब सपना रहेगा
न सपना बनकर ।

वर्षा एच कुकणा
श्री सत्य साई विद्यानिकेतन,नवसारी

चरित्रवान व्यक्ति

दुनिया मे कुचरित्र की कोई कमी नहीं है ।
पर अच्छे चरित्र की कमीं है ।

जब चरित्र पर दाग पड़ जाता है ।
तब अच्छे चरित्र का बुराई से पाला पड़ जाता है ।

दुनिया में हसीन बातें सब भूल जाते हैं ।
कि व्यक्ति को अंत मे केवल अच्छाई ही काम आती है ।

जिस दिन व्यक्ति को बुराई की लत लगी
उस दिन समझो कि उसकी दशा बिगड़ गई ।

जो व्यक्ति अपने चरित्र को समझता है खेल
वही उस जिंदगी में होता है फेल ।

जो व्यक्ति अपने दिल से नहीं दिमाग से है समझता
वह जीवन में बुराई के पीछे है भागता ।

मनुष्य को अपने जीवन का ज्ञान रखना चाहिए
और अपनी अच्छाई को हंमेशा साथ रखना चाहिए ।

जो व्यक्ति जीवन में करता है प्रेम , भाव और भक्ति
उस आदमी को कहते है चरित्रवान व्यक्ति ।।

साईरंजन भट्ट
श्री सत्य साई विद्यानिकेतन, नवसारी

चरित्रवान व्यक्ति

चरित्र वान व्यक्ति
करे दिल और भाव से भक्ति,
जो बनाए उसका चित्र,
और रहे स्वस्थ और पवित्र ।

जिसके ह्रदय में दूसरे के लिए प्यार हो
जैसे गाँधीजी की तरह देश के लिए कुरबान हो ।

जिसके दिल में हो सच्चाई,
और करे बुराई का सामना,
वो ही होती है चरित्र वान व्यक्ति की मनोकामना ।

जिसके ह्रदय में हो भाव और भक्ति,
वो है चरित्रवान व्यक्ति ।

जिसके मन में हो सत्य की सोच,
और हो बुराई की नोंच,
और उसकी बने दूर-दूर तक पहोंच ।

होता है चरित्र मनुष्य का एक मात्र गुण,
जो निकाले दिल से बुराई की बूंद - बूँद ।

ऋत्विक शाह
श्री सत्य साई विद्यानिकेतन, नवसारी

चरित्रवान व्यक्ति

चरित्रवान व्यक्ति वो व्यक्ति नहीं जो,
प्रतिदिन मंदिर जाता,
गंगा यमुना के संगम पर,
डुबकी मार नहाता ।
चरित्रवान व्यक्ति वो व्यक्ति नहीं जो,
मस्जिद में चिल्लाता,
धर्म बदल कर इसका – उसका,
गिरजा घर ले आता ।
चरित्रवान व्यक्ति वो व्यक्ति नहीं जो,
सत्ता में खो जाता,
आंतकी बन सकल विश्व में,
जो विध्वंस कराता ।
चरित्रवान व्यक्ति वह सच्चा,
जो बच्चों सा रहता,
इसलिए तो यह जग सारा,
उसको ईश्वर कहता ।
चरित्र एक ऐसा पारसमणि है,
जो हर किसी लोहे को स्वर्ण बनाता ।

लिसा एस. पटेल
श्री सत्य साई विद्यानिकेतन, नवसारी

चरित्रवान व्यक्ति

हम जंग न होने देंगे ।
विश्व – शांति के हम साधक है , जंग न होने देंगे ।
कभी न खेतों में फिर खूनी खाद फैलेगी
खलिहानों में नहीं मौत की फसल खिलेगी
आसमान फिर कभी न अंगारे उगलेगा
एटम में नागासाकी फिर नहीं जलेगा ।
युध्दविहीन विश्व का सपना भंग न होने देंगे ।
जंग न होने देंगे ।
हमें चाहिए शांति, ज़िदंगी हमको प्यारी
हमें चाहिए शांति, सृजन की है तैयारी
हमने छेड़ी जंग भूख से बीमारी से
आगे आकर हाथ बँटाए दुनिया सारी
हरी – भरी धरती को खूनी रंग न लेने देंगे ।
जंग न होने देंगे ।
यही है चरित्रवान व्यक्ति कि सोच,
और भावना जो एक व्यक्ति सब की सावधानी
के बारे में सोचे, और देश की भलाई में सोचे ।

युग भवसार
श्री सत्य साई विद्यानिकेतन, नवसारी

चरित्रवान व्यक्ति

जो व्यक्ति होते है चरित्रवान,
वे करते अपना काम समयानुसार ।
एक ऐसे व्यक्ति महात्मा गांधी,
जिन्हौंने अपने बल पर दिलाई आज़ादी ।
धन तो आता और चला जाता है।
परंतु जो व्यक्ति चरित्रवान है.
उसका चरित्र कभी नहीं जाता ।
जो आलस्य को दूर करने में कामयाब हुआ,
वह व्यक्ति सफलता से चरित्रवान हुआ ।
अब तो चरित्रवान बहुत कम रहे है,
औरों की तरह स्वार्थ प्रपंचना में बहे है ।
यदि सब स्वार्थी नहीं होते,
तो दुनिया में सभी चरित्रवान होते ।
व्यक्ति धन में मगन होने को आए,
इसलिए आदर्श चरित्रवान जन्म नहीं ले पाए ।
आज कल लोग चरित्र से नहीं,
अपने शरीर की हवस मिटाने लगे है ।
कबीर ने चरित्र के बारे में बहुत कहा,
परंतु मनुष्य स्वार्थ के दामन पर चला ।
अब तो मनुष्य का चरित्र से नहीं,
बल्कि पशुता से रिश्ता जुड़ गया ।
आदर्श चरित्र को जिसने चुना,
उसने स्वर्ग में रास्ता पाया ।
शिक्षाः हमें चरित्रवान होना चाहिये ।

अपूर्व एच. पटेल
पुल्हाश्रम इंटरनेशनल स्कूल, डाकोर

चरित्रवान व्यक्ति

तुम चरित्रवान बनकर, नवीन कल्पना करो ।
तुम कल्पना करो ।
अब घिस गई समाज की तमाम नीतियाँ,
अब घिस गई मनुष्य की अतीत रीतियाँ,
हैं दे रहीं चुनौतियाँ तुम्हें कुरीतियाँ,
तुम चरित्रवान बनकर, नवीन कल्पना करो ।
तुम कल्पना करो ।

जंजीर टूटती कभी न, अश्रु – धार से,
दुख – दर्द दूर भागते नहीं दुलार से,
हटती न दासता पुकार से, गुहार से,
इस गंग – तीर बैठ आज राष्ट्र शक्ति की
तुम चरित्रवान बनकर, किशोर, कामना करो ।
तुम कामना करो ।

जिसकी तरंग लोल हैं अशांत सिंधु वह,
जो काटता छटा प्रगाढ़ वक्र इंदु वह,
जो मापता समग्र सृष्टि दृष्टि – बिंदु वह,
वह है मनुष्य जो स्वदेश की व्यथा हरे,
तुम चरित्रवान बनकर, मनुष्य यातना करो ।
तुम यातना करो ।

तुम प्रार्थना किए चले, नहीं दिशा हिली,
तुम साधना किए चले, नहीं निशा हिली,
इस आर्त दीन देश की न दुर्दशा हिली,
तुम चरित्रवान बनकर, अमोध अर्चना करो ।
तुम अर्चना करो ।

आकाश है स्वतंत्र, है स्वतंत्र मेखला,
यह श्रृंग भी स्वतंत्र ही खड़ा बना ढ़ला,
है जल प्रपात काटता सदैव श्रृंखला,
आनंद, शोक, जन्म और मृत्यु के लिए –
तुम चरित्रवान बनकर, स्वतंत्र योजना करो ।
तुम योजना करो ।

जेनिश पटेल
श्री सत्य साई विद्यानिकेतन, नवसारी

चरित्रवान व्यक्ति

पुरुष हो, पुरूषार्थ के लिए उठो ।
पुरुष क्या, पुरूषार्थ हुआ न जो
ह्रदय की सब दुर्बलता तजो ।
प्रबल जो तुम में पुरूषार्थ हो
सुलभ कौन तुम में न पदार्थ हो ?
प्रगति के पथ पर विचारो उठो
पुरुष हो, पुरूषार्थ करो, उठो ।
न पुरूषार्थ बिना कुछ स्वार्थ है
न पुरूषार्थ बिना परमार्थ है ।
समझ लो यह बात यथार्थ है
कि पुरूषार्थ ही पुरूषार्थ है ।
भुवन में सुख – शांति भरो उठो ।
पुरुष हो, पुरूषार्थ करो, उठो ।
न पुरूषार्थ बिना वह स्वर्ग है
न पुरूषार्थ बिना वह अपवर्ग है ।
न उसमें यश है, न प्रताप है ।
न कृमि-कीट समान मरो- उठो,
पुरुष हो, पुरूषार्थ करो, उठो ।

जशवंत. एस .नायक
श्री सत्य साई विद्या निकेतन, नवसारी

चरित्रवान व्यक्ति

एक ऐसी शक्ति है,
जो हर महाशक्ति पर छा जाने वाली है ।
अगर एक व्यक्ति का चरित्र महान हो जाए,
तो संसार भी उसका कुछ बिगाड़ नहीं पाए ।
व्यक्ति के चरित्र से जेल भी मंदिर बन जाते है ।
अपमान भी सम्मान बन जाता है ।
विष के प्याले अमृत बन जाते है ।
एक बिगड़ा हुआ आदमी भी अच्छा बन जाता है ।
वह सदा जब तक जीता है संतुष्ट रहता है
वह सदा एक चरित्रवान व्यक्ति रहता है
प्रेम और मानवता उसकी जीने की परिभाषा
इसी पर टिकी है पूरे देश की आशा ।
चरित्र अगर महान है,
व्यक्ति की जिंदगी सफल हो जाती है,
चरित्र एक ऐसी शक्ति है,
हर शक्ति पर वो भारी पड़ती है ।
उसकी पहचान चरित्र से होती है,
वो पत्थर को घिस के मोती बना सकता है
मोती को तराशा तो हुआ एक निर्माण
हुआ एक सच्चे चरित्रवान इन्सान का प्रतिकार ।
एक चरित्रवान व्यक्ति सीना तानकर
नज़रे उठाकर गर्व से जीता है ।

पटेल विश्वा. वी.
श्री सत्य साई विद्यानिकेतन, नवसारी

चरित्रवान व्यक्ति

चरित्रवान व्यक्ति की हर जगह होती है बड़ाई,
इसी में छिपी है पूरे देश की सच्चाई ।

चरित्रवान व्यक्ति का सम्मान हर कोई करता,
चरित्रवान व्यक्ति के बिना देश तरक्की नहीँ करता ।।

चरित्रवान व्यक्ति को सुख की चाह नहीं,
दुःख की उसको परवाह नहीं ।

तन-मन–धन – प्राण वह चढाएगा
आगे कदम बढ़ाते वह जाएगा ।।

चाहे पड़ती हो धूप झड़ी,
चाहे वर्षा की लगे झडी ।

पीछे पैर नहीं वह हटाएगा,
आगे कदम बढ़ाते वह जाएगा ।।

पिता का कष्ट सहेगा वह,
माता के लिए मरेगा वह ।

अपनी टेक वह निभाएगा,
हरदम आगे कदम बढ़ाते वह जाएगा ।।

पटेल फेनी. आर.
श्री सत्य साई विद्या निकेतन, नवसारी

चरित्रवान व्यक्ति

दोहरे चरित्र का बन रहा इन्सान है,
ऊपर से साधू अन्दर से बेईमान है ।

बदल बदल कर अपने मुखौटों से
अपने चरित्र का कर रहा निर्माण है ।

चरित्र वो आईना है, हर आदमी का,
जो हमको कहता है, कौन कितना महान है ।

दुःचरित्र के कारण इस लोक में क्या
परलोक में भी, नहीं होता कल्याण है ।

नज़रिया हर आदमी का है अलग-अलग
जैसी द्रष्टि वैसी सृष्टि, जैसा जिसका ध्यान है ।

अमन जग में होगा चरित्र उसका ऊँचा,
गुरू वचनों पर होता जो कुर्बान है ।

मनुष्य हो तुम, अमित बुद्धि-बल जन्म तुम्हारा,
क्या उद्देश्य-रहित हो जग में, क्या तुमने खोजा है ।

दोहरे चरित्र का बन रहा इन्सान है,
ऊपर साधू अन्दर से बे-ईमान है ।

रिया. एच. पटेल
श्री सत्य साई विद्यानिकेतन, नवसारी

चरित्रवान व्यक्ति

चरित्र व्यक्ति हो, अमित बुद्धि-बल विलसित जन्म तुम्हारा ।
क्या उद्देश्य –रहित चरित्र हो जग में,तुमने कभी विचारा ।।
यह संसार व्यक्ति के चरित्र के लिए एक परीक्षा –स्थल है ।
दुख है, प्रश्न कठोर देखकर होती बुद्धि विकल है ।
कोई व्यक्ति बड़ा- छोटा नहीं होता ।
उसका चरित्र ही आभूषण होता ।।
चरित्रवान व्यक्ति की कमी सभी को खलती ।
उसके बिना सृष्टि कभी न फलती –फूलती ।।
व्यक्ति का चरित्र उसे महान बनाता ।
समाज श्रेष्ठ और देश समृद्ध होता ।।
चरित्र सभी व्यक्ति की खोज है ।
बिना चरित्र के व्यक्ति का नहीं कोई शोध है ।
आज हम सब भारत वासी चरित्र का गुणगान करते है ।
चरित्र की महिमा का सबके समक्ष बखान करते है ।
पवित्र मन रखो, पवित्र तन रखो
पवित्रता मनुष्यता की शान है ।
जो मन वचन कर्म से महान है ।

सिध्दि एच. पटेल
श्री सत्य साई विद्या निकेतन, नवसारी

आदमी के रूप-रंग

जगो कि तुम हज़ारों सो चुके.
जगो कि तुम हज़ार साल खो चुके,
जहान बस सजग –सचेत आज तो
तुम्ही रहो पड़े हुए न बेखबर ।

हुआ सवेरा आँखे खोलो,
बिस्तर छोड़ो और मुँह धोलो ।

खुश होकर काम पर जाओ
काम करने में मन लगाओ ,
अपना हित इसमें ही जानों।

नेक बनो अच्छे कहलाओ,
नीज जीवन को श्रेष्ठ बनओ।

उठो चुनौतियाँ मिली, जवाब दो,
कदीम कौम-नस्ल का हिसाब दो,
उठो स्वराज्य के लिए संकल्प दो,
उठो देश के लिए कसो कमर ।

नेहरू – बापू का यह देश,
देता हमको यह संदेश ।

सत्य – प्रेम की राह बनाओ
सदा ही आगे बढ़ते जाओ।

बढ़ो दुश्मन सामने खड़ा हुआ ।
बढ़ो निशान जंग का गढ़ा हुआ ।
सुयश मिला कभी नहीं पड़ा हुआ,
मिटो, मगर लगे न दाग देश पर।

तरल एच डेडकिया
श्री सत्य साई विद्यानिकेतन, नवसारी

मानव प्रेम

चल तू अपनी राह पथिक, चल तुझको विजय-पराजय से क्या ?
भँवर उठ रहें हैं सागर में,
मेघ उमड़ते हैं अंबर में,
आँधी औ तुफ़ान डगर में,
तुझको तो केवल चलना हैं, चलना ही है फिर हो भय क्या ?
इस दुनिया में कहीं न सुख है,
इस दुनिया में कहीं न दुःख है,
जीवन एक मानव प्रेम का रूख है,
होने दे होता है जो कुछ, इस होने का हो निर्णय क्या ?
चल तू अपनी राह पथिक, चल तुझको विजय-पराजय से क्या ?
अरे, थक गया फिर बढ़ता चल,
उठ, संघर्षो से अड़ता चल,
जीवन प्रेम पथ चढ़ता चल,
अड़ा हिमालय हो यदि आगे, 'चढ़ूँ कि लोंटू' यह संशय क्या ?
चल तु अपनी राह पथिक, चल तुझको विजय-पराजय से क्या ?
कोई रो-खोकर सब खा
कोई खोकर सुख में सोता,
दुनिया में एसा ही होता,
जीवन का क्रम मरण यहाँ पर, निश्चित ध्येय यदि फिर क्षय क्या ?
चल तू अपनी राह पथिक, चल तुझको विजय-पराजय से क्या ?
कहाँ प्रकाशित नहीं रहा है तेज हमारा,
दलित कर चुके शत्रु सदा हम पैरों द्वारा,
बतलाओ तुम कौन नहीं जो हमसे हारा,
पर शरणागत हुआ कहाँ, कब हमें न प्यारा ।
बस युद्ध-मात्र को छोड़कर, कहाँ नहीं है हम सदय !
फिर एक बार है विश्व ! तुम, गाओ मानव प्रेम की विजय।

डेरिक. पटेल
तृतीय श्रेणी (उच्चतर माध्यमिक)
श्री सत्य साई विद्यानिकेतन, नवसारी

ईश्वर आराधना

हम सब नन्हें-नन्हें बालक,
माँग रहे वरदान,
दो हमको भगवान ।
विद्या, बुद्धि बढ़े दिन-प्रतिदिन.
मिले ज्ञान आलोक,
सुख, वैभव से देश भरा हो,
रहे न कोई दुःख ।
जन-जन के मन में गुंजता हो,
देश भक्ति का गान,
माँग रहे वरदान,
दो हमको भगवान ।
घर-घर में उजियारा फैले,
भागे अंधेरा दूर ।
भूखा प्यासा रहे न कोई,
कृषक और मज़दूर ।
सोना-चाँदी लगे उगलने,
खेत और खलिहान,
माँग रहे वरदान,
दो हमको भगवान ।
भारत प्यारा देश हमारा,
हम है नन्हें फूल ।
दुनियाभर से प्यार हमें है,
हम सबको अनुकूल ।
हम भुज बल पर रहे सदा
विश्वास और अभिमान ।
माँग रहे वरदान,
दो हमको भगवान ।

रोशनी पटेल
प्रथम श्रेणी (पूर्व माध्यमिक)
श्री सत्य साई विद्यानिकेतन, नवसारी

प्रार्थना

इस बाग के फूल हैं हम,
ये बाग हमारा हैं ।

भगवान हम बच्चों को
एक तेरा सहारा है ।

तेरा दिया हम खाते हैं,
और नेमत पाते है ।

संसार के जीव सभी,
तेरी महिमा गाते हैं ।

सब जानते हैं इतना,
तू ही पालनहार ।

भगवान हम बच्चों को,
एक तेरा सहारा है ।

भारत के भविष्य हैं हम,
भारत वर्ष हमारा हैं ।

भगवान हम बच्चों को,
एक तेरा सहारा है ।

मानस पटेल
प्रथम श्रेणी (पूर्व माध्यमिक)
श्री सत्य साई विद्यानिकेतन, नवसारी

ईश्वर आराधना

हाथ जोड़कर, शीश झुकाकर,
हम करते हैं उसे प्रणाम ।

जिसने हमें प्रकाश दिखाया,
धरती और आकाश बनाया,
हम करते हैं उसे प्रणाम ।

जो दिन में सूरज चमकता,
रातो में तारे बिखराता,
रंग-रंग के फूल खिलाता,
भाँति-भाँति के फूल उपजाता,
हम करते हैं उसे प्रणाम ।

जिसने हमके प्यार दिया है,
माँ का सरस दुलार दिया है,
जीने का सामान दिया है,
भले बुरे का ज्ञान दिया है,
हम करते हैं उसे प्रणाम ।

जो सारे जग का हितकारी,
उस ईश्वर से विनय हमारी,
जो अच्छा हो वही करें हम,
बुरे मार्ग पर पग न धरें हम,
कभी न भूलें उसका नाम ।

हाथ जोड़कर, शीश झुकाकर,
हम करते हैं उसे प्रणाम ।

खुशी टी पटेल
द्वितीय श्रेणी (पूर्व माध्यमिक)
श्री सत्य साई विद्यानिकेतन, नवसारी

ईश्वर आराधना

भगवान! भक्त तुम्हारे लाते बहुमूल्य उपहार,
सोना, चांदी, हीरे, मोती के पहनाते हार ।

धूप, दीप, नैवेद्य चढ़ाकर करते तुम्हे प्रसन्न,
धूमधाम से गाते हैं वे, भजन और कीर्तन ।

मैं कुटिया की वासी हूँ, कुछ साथ नहीं मैं लायी हूँ,
फिर भी साहस करके मैं, पूजा करने को आई हूँ ।

घी के दीप जला पाऊँ, ऐसा मेरा सौभाग्य नहीं,
खीर बनाकर भोग लगाऊँ, इसके भी तो योग्य नहीं ।

आई हूँ मैं तेरी चौखट, लेकर खाली हाथ,
दान-दक्षिणा चढ़ा ना पाई, तेरे द्वारे नाथ ।

भक्ति गीत सुर से गा पाऊँ, ऐसा मेरा गान नहीं,
मैं अनपढ़, भारी शब्दों का मुझको कोई ज्ञान नहीं ।

हृदय में तेरे लिए बसा वो प्रेम दिखाने आई हूँ,
और नहीं कुछ सिवा प्रेम के यही लुटाने आई हूँ ।।

योमा पटेल
तृतीय श्रेणी (पूर्व माध्यमिक)
ब्राईट डे स्कूल, वड़ोदरा

प्रार्थना

तेरी पूजा करूँ मैं प्रतिदिन,
हर सुख-दुख में साथ दे प्रभु तू,
बस यही प्रार्थना करूँ मैं,
तेरी पूजा करूँ मैं प्रतिदिन,
महिमा तेरी ये कण-कण में छाई,
हर तरफ है तेरी ही दुहाई,
हर बुराई से बचा है प्रभु तू,
हो सके तो करे हम भलाई ।

भेद-भाव न करें हम किसी से,
आगे बढ़ रहे हम तेरे करम से,
फूल खुशियों के बाँटे सभी को,
दुश्मनों को भी माफ़ करें हम ।

तेरी पूजा करूँ मैं नित्य दिन,
हर सुख-दुख में साथ दे हे प्रभु तू,
तेरी पूजा करूँ मैं नित्य दिन,

सृष्टि कुमारी
द्वितीय श्रेणी (पूर्व माध्यमिक)
ब्राईट डे स्कूल वासना, वड़ोदरा

ईश्वर आराधना

तुम माता, तुम पिता हमारे,
तुम स्वामी, हम दास तुम्हारे ।
तुमने सब संसार बनाया ।
तुझसे हमने सब कुछ पाया ।
तुम्ही सूर्य हो, तुम्ही चंद्र तारा ।
तुम्ही ने सभी सृष्टि को है सँवारा ।
गगन, भूमि, जल, अन्न, फल, फूल सारा ।
किसी से सभी न्यारे, न कुछ तुम से न्यारा ।
अखिल विश्व में व्याप्त है दिव्य सत्ता ।
तुम्हारे बिना हिल सकता न पत्ता ।
मुझे शक्ति दो गीत गाऊँ तुम्हारे ।
मुझे भक्ति दे काम आऊँ तुम्हारे ।
भगत सिंह नेता जी जैसे ।
बने देश के वीर प्रभु ।
हाथ जोड़कर शीश झुकाकर ।
माँगे यह वरदान प्रभु ।

ध्वनी पटेल
तृतीय श्रेणी (पूर्व माध्यमिक)
श्री सत्य साई विद्यानिकेतन, नवसारी

ईश्वर आराधना

सुख भी मुझे प्यारे हैं, दुःख भी मुझे प्यारे है ।
छोड़ूँ मैं किसे भगवान, दोनो ही तुम्हारे हैं ।
सुख भी मुझे प्यारे हैं, दुःख भी मुझे प्यारे है ।
सुख दुःख इस जीवन की गाड़ी को चलाते है ।
सुख दुःख ही हम सबको इंसान बनाते है ।
छोड़ूं मैं किसे भगवान, दोनो ही तुम्हारे हैं ।
दुःख चाहे न कोई भी सब सुख को तरसते हैं ।
दुःख में सब गाते है, सुख में सब हँसते हैं ।
सुख मिले उसके पीछे दुःख ही तो सहारे हैं ।
छोड़ूँ मैं किसे भगवान, दोनो ही तुम्हारे हैं ।
सुख में तेरा शुक्र करुं दुःख में फरियाद करु ।
जिस हाल में रखे मुझ में तुम्हे याद करुं ।
मैंने तेरे आगे ये हाथ पसारे है ।
छोड़ूँ मैं किसे भगवान, दोनो ही तुम्हारे हैं ।

रीया
तृतीय श्रेणी (पूर्व माध्यमिक)
न्यू एरा सीनियर सेकन्डरी स्कूल, वड़ोदरा

चरित्रवान व्यक्ति

जिसमे हो ईमानदारी और मान,
जो हो कर्तव्यनिष्ठ और करे हर काम,
जो सबको देता हो सम्मान,
वही कहलाता है चरित्रवान ।

जो करे पालन अपना धर्म,
हमेशा करे जो अच्छे कर्म,
कोई जो हो राम भगवान समान,
वही कहलाता है चरित्रवान ।

जो करे नियमों का पालन,
और करे उन नियमों को धारण,
जो अच्छे विचार करे प्रदान,
वही कहलाता है चरित्रवान ।

जो अपने कार्य में रुके न कभी
जो अपने कार्य में थके न कभी,
है जो व्यक्ति इतना महान,
वही कहलाता है चरित्रवान ।

होते है ये हज़ारो में एक,
कर्म है अच्छे और ईरादे है नेक,
अच्छे कामों में जो लगाए अपना ज्ञान,
वही कहलाता है चरित्रवान ।

सही राह पर चलने वाले,
और दूसरों को भी राह पर लाने वाले,
होता है जो इतना विद्वान,
वही कहलाता है चरित्रवान ।

अपना ही नही रखे सब का ध्यान,
जिसकी हो अपनी अनोखी शान,
ऐसी है जिसकी पहचान,
वही कहलाता है चरित्रवान ।

जो देश के लिए दे दे अपनी जान,
ऐसी हो जिसकी देश भक्ति,
यह सच है कि हर देश की सबसे बड़ी शक्ति,
है उस देश के चरित्रवान व्यक्ति ।

विशेष मालेवार

प्रथम श्रेणी(माध्यमिक)

न्यू एरा सीनियर सेकन्डरी स्कूल, वड़ोदरा।

चरित्रवान व्यक्ति

है चरित्र मनुष्य के जीवन का एक अनमोल गुण,
जो भरे भावनाएँ और बनाए मनुष्य को महत्वपूर्ण,
जो बने बेसहारे का सहारा, करे दिल से सबकी भक्ति,
मनुष्यता से जिए जो जीवन, बने वह चरित्रवान व्यक्ति ।
धर्म का पालनकर प्रेम के पथ पर जो जाए,
खुद प्रेम की ज्योत जलाए, औरों को भी राह दिखाएँ,
जो बुराई रुपी अंधकार से दिलाए सबको मुक्ति,
मनुष्यता से जिए जो जीवन, बने वह चरित्रवान व्यक्ति ।
जिसकी आँखों से निकले सत्यता की पवित्र दृष्टि,
बनाए चरित्र को ऊज्ज्वल, सुधारे वह संपूर्ण सृष्टि,
जिसके बुरे चरित्र का करे नाश यह अच्छाई की शक्ति,
मनुष्यता से जिए जो जीवन, बने वह चरित्रवान व्यक्ति ।
क्योंकि है वह दिखाता सबको सिर्फ नैतिक्ता का रास्ता,
जिसे है मातृभूमि से प्रेम और करे दिल से देश भक्ति,
मनुष्यता से जिए जो जीवन, बने वह चरित्रवान व्यक्ति ।
मनुष्य का वस्त्र होता है उसका अनमोल चरित्र,
जिसे पहनने पर अनुशासित हो जाता है उसका चित्र,
जिससे चले यह जग सारा, सुधारे वह संपूर्ण धरती,
मनुष्यता से जिए जो जीवन, बने वह चरित्रवान व्यक्ति ।

पार्थ वी. प्रजापति
द्वितीय श्रेणी (माध्यमिक)
श्री सत्य साई विद्यानिकेतन, नवसारी

चरित्रवान व्यक्ति

चमड़ी बिना पूरा शरीर जैसे अति विचित्र है
उसी प्रकार हमारे जीवन में हमारा चरित्र है ।
चरित्रवान व्यक्ति ही ईश्वर का अंश है
हमारा भारत जैसे देवताओं का वंश है ।
यदि चरित्र ही हमारा कवच बने,
सारी सृष्टि इस धरा की बचत बने ।
सुंदर हमें सारी सृष्टि से यह कहना है ।
कुंदन तपता तो चमक बढ़ जाती है,
कई प्रहार सहने पर ही धातु आकार पाती है ।
वैसे ही चरित्र को शुद्ध और प्रबुद्ध रखो,
सब कुछ नाशवंत है पर चरित्र को ही लिखो
राम चरित मानस से लेकर,
बुद्ध और गांधी के चरित्र ने हमको कुछ देकर,
एक धरोहर हमको दी है ।
चरित्रवान व्यक्ति ही इस पृथ्वी की धुरी है ।
जो जिए एक पशु की भांति,
तो चरित्र का कोई आडंबर नहीं ।
पर यदि मनुष्य हो तो चरित्र ही चरित्र तुम्हारा अंबर है ।
पशु और मनुष्य में बस यही अंतर है,
चरित्र ही उनके बीच का अर्थ है ।
बिना चरित्र कपड़े से तन ढ़कना व्यर्थ है ।
इस धरा और देश का चरित्रवान ही भविष्य समर्थ है ।
जो जिया चरित्र के साथ, उसका ही सत् चरित्र और जीवन पूर्ण है ।
उसी को तो दुनिया ने किया हँमेशा स्मरण है ।

खुशी उपाध्याय
तृतीय श्रेणी (माध्यमिक)
ब्राइट डे स्कूल वासना, वड़ोदरा

मानव प्रेम

हिन्दु – मुस्लिम भाई-भाई, यही हमारा नारा ।
सिख-ईसाई सब है भाई हमने यही विचारा ।।

एक तिरंगा झंडा अपना तीन रंग की धारा ।
मजहब और जुबानों से है ऊँचा मानव-प्रेम हमारा ।।

आओ साथ चलें,फिर से गले मिलें ।
एक लक्ष्य है, एक दिशा है, अपना है जग सारा ।।

हम हो भले बाद में कुछ भी, पहले हैं इन्सान ।
सबके अपने-अपने मज़हब है लेकिन एक ध्यान ।।

हिन्दु-मुस्लिम, सिख-ईसाई है हमारा धर्म के मान ।
अलग-अलग है नाम, पर हम सब है एक समान ।।

खेलें ऐसा खेल, मानव प्रेम हो जिसका आधार ।
और मानव-प्रेम से बनें हमारा एक बड़ा परिवार ।।

भविष्य द्वारा मुक्त से प्रेम के भाव से चलों ।
मनुष्य बन मनुष्य से गले मिलें चले चलों ।।

समान भाव के प्रकाशवान सूर्य के तले ।
समान मानव-प्रेम के रूप से खिले चलो ।।

अनुशासन की मर्यादा जनतंत्र है ।
मानव-प्रेम ही जीवन का गुरुमंत्र है ।।

सभी कुटुंब एक, कौन पास कौन दूर है ।
इस धरती के हर एक व्यक्ति एक नूर हैं ।।

शुल-फूल से भरे हमारे रास्ते ।
लेकिन मंज़िल पर लाना विश्वास है ।।

सत्य, अहिंसा, शांति समय के सारथी ।
और मानव-प्रेम बन गया है हमारा साथी ।।

यह संसार मनुष्य के लिए एक परीक्षा-स्थल है ।
दुःख है प्रश्न कठोर देखकर होती बुद्धि विकल है ।।

किन्तु स्वात्म बल-विज्ञ सत्यपुरुष ठीक पहुँच अटकल से ।
हल करते हैं प्रश्न-सहज में मानव-प्रेम के बल से ।।

लहू गर्म करने को रखो मन में ज्वलित विचार ।
हिंसक जीव से बचने को चाहिए किन्तु मानव-प्रेम का वार ।।

अलग-अलग है भेद और, जहाँ निर्भय नहीं होते नर नारी ।
कलम उगलती आग, जहाँ हरदम जलती मानव-प्रेम की चिनगारी ।।

हिन्दू – मस्लिम भाई-भाई, यही हमारा नारा ।
सिख-ईसाई सब है भाई हमने यही विचारा ।।

एक तिरंगा झंडा अपना तीन रंग की धारा ।
मजहब और जुबानों से है ऊँचा मानव-प्रेम हमारा ।।

श्याम. एस. पटेल
प्रथम श्रेणी (उच्चतर माध्यमिक)
श्री सत्य साई विद्यानिकेतन, नवसारी

मानव – प्रेम

कठिन राह आसान हुई
आया जब मानव मे प्रेम,
सुख आय़ा दुःख दूर हुवा
आया जब मानव मे प्रेम ।

मानव जैसे गुण मानव में
दानव जैसे कोई नहीं,
दया, प्रेम का भाव सभी में
लाता है मानव प्रेम ।

भाषा जाति पहनावे पर
बँटें न अब मानव कोई,
सब में ही है एक प्रभु
सिखलाता है मानव – प्रेम ।

मानव की पहचान बनें हम
मानवता की शान बने हम,
सबको अपनापन देकर
अपनाते है मानव – प्रेम ।

हिमानी रामकृष्णभाई पटेल
श्री सत्य साई विद्यानिकेतन, नवसारी

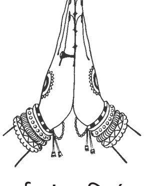

मानव प्रेम

प्रेम का सागर मन बन जाए, प्रेम ही आँखों मे बस जाए,
प्रेम ही बोले , प्रेम ही तोले, प्रेम का सबको पाठ पढाए,
आज समय की माँग यही है, प्रेम में विश्वास यह सारा हो,
मानवता ही धर्म हमारा, मानवता ही नारा...............

मानव को मानव से जोड़े, संकीर्णता को हम छोड़ें,
निर्माण करें हम प्रेम पुलों का, नफरत की दीवारें तोड़े,
समदृष्टि से सबको देखें, हर कोई आँखों का तारा हो,
मानवता ही धर्म हमारा, मानवता ही नारा...............

एसा हो जीवन ये सुहाना, ना कोई बैरी ना ही बेगाना,
हम संतान है एक पिता के, आ जाएँ बस प्रेम निभाना.
प्रेम में डूबें, प्रेंम से महका अपना जीवन सारा हो,
मानवता ही धर्म हमारा, मानवता ही नारा...............

एक को जाने, एक को माने, और फिर एक हो जाए,
खुद ही ज्ञान की दृष्टि ले, औरों को राह दिखाए,
प्रेम ही अंदर प्रेम ही बाहर, प्रेम ही पूरे संसार में प्यारा हो,
मानवता ही धर्म हमारा, मानवता ही नारा...............

जय कुमार पटेल
द्वतीय श्रेणी (उच्चतर माध्यमिक)
श्री सत्य साई विद्यानिकेतन, नवसारी

मानव प्रेम

अंधेरी रात में जैसे चमकता है सितारा,
दुःख, दर्द का यह संसार सारा,
दर्द से दूर हो यह मानव बेचारा,
मिल जाए जो एक प्रेम की धारा ।
पाप,अधर्म से भरा यह संसार,
कर रहा मानव को धीरे धीरे बीमार,
युद्ध और विनाश का यह बढ़ता प्रहार,
चारों तरफ गंदगी सा फैला अत्याचार,
मासूम बन रहा इसका शिकार,
सत्य के इस बान को रहा ललकार ।
जाँत-पाँत ही हम मानवों को बाँटे,
फूल से इस जहान में फिर भी हैं काँटे,
मंदिर-मस्जिद एक है माना,
अलग-अलग नामों से सब ने है जाना,
भाई-भाई में फिर क्यों लड़ाई,
सभी ने बस अपनी कथा सुनाई ।
एक सुबह का नया सवेरा,
लाएगा एक नया बसेरा,
सत्य, धर्म की नयी ये आशा,
बनेगी मानवों की एकमात्र भाषा,
होगी चारों और सुख और शांती
मिट जाएगी मानवों की यह खून भरी क्रांती,
होगी खुशियों की लेन-देन,
तभी बढ़ेगा मानव-प्रेम ।

अक्षय डी. मकवाना
तृतीय श्रेणी (उच्चतर माध्यमिक)
श्री सत्य साई विद्यानिकेतन, नवसारी

मानव प्रेम

माता- पिता की तबीयत बिगड़ी,
तो बेटे को दम नहीं,
धंधा पानी छोड़ के माता से,
मिलने का कोई धर्म नहीं ।

चाहे पूजा पाठ करो चाहे,
प्रवचन सुन लो भाई
चाहे कितना धर्म करो,
बिना माँ के सब व्यर्थ है भाई ।

जिसने नहीं दिया माता को,
प्रभुवर को क्या पाएगा,
जिसने नहीं दिया पिता को,
वह जीवन में क्या पाएगा ।

चाहे बड़ी तपस्या कर लो,
चाहे लाखों का दो दान,
चाहे तुम कर लो गंगा-स्नान,
माता- पिता में चारो धाम ।

रोहित पटेल
श्रीसत्यसाई विद्यानिकेतन, नवसारी

मानव प्रेम

प्रेम अमन का दीप जलाएँ,
घर घर में उजियारा हो,
मानवता ही धर्म हमारा,
मानवता ही नारा हो.......

प्रेम का सागर मन बन जाए,
प्रेम ही आँखों में बस जाए,
प्रेम ही बोले, प्रेम ही तोले
प्रेम का सबको पाठ पढ़ाएँ,
आज समय की माँग यही है,
प्रेम में विश्व यह सारा हो,
मानवता ही धर्म हमारा,
मानवता ही नारा हो.......

मानव को मानव से जोड़े,
संकीर्णता को हम छोड़े,
निर्माण करें हम प्रेम फूलों का,
नफ़रत की दीवारें तोड़े,
संदृष्टि से सबको देखे,
हर कोई आँख का तारा हो......

मानवता ही धर्म हमारा,
मानवता ही नारा हो.......

विलोकी. डी. धन्गर
तृतीय श्रेणी (उच्चतर माध्यमिक)
श्री सत्य साई विद्यानिकेतन, नवसारी

मानव प्रेम की स्थिति

सामजिक प्रेम में मानव प्रेम की स्थिति,
लगती है जैसे उतरती चढ़ती राजनीति,
जब आती है कठिन परिस्थिति |
उभरता है जब जीवन प्रेम से
प्रेमी व्यक्ति का खिला रहता है चेहरा,
मुस्कान होती है प्रेमी मन का सेहरा
स्वच्छ विचारों में खुशी का मन में डेरा |
अटूट प्रेम देता है विश्वास, सच्चा,गहरा |
चारों तरफ ग़म से घिरे रहने पर,
महसूस होती है प्रेम की अहमियत,
मात्र प्रेम के झोंके आ जाने से
खुशहाल हो जाती है जिन्दगी की तबीयत |
प्रेम में भूल जाते हैं हम अपने ग़म
सुहाना लगने लगता है हर मौसम
प्रेम बाँटने के लिए हो कोई
सुखिया हो जाए सब संसार |

एमिष. आर. पटेल

श्री सत्य साईं विद्यानिकेतन, नवसारी

ईश्वर आराधना

हमारे रिश्ते जो बनें हैं जन्म से,
उसे निभाना हमारा कर्तव्य हैं ।
मगर ईश्वर की सृष्टि की सेवा करना,
ईश्वर की असली भक्ति हैं ।
अच्छे करम करते रहने से,
मिलती हमें वो शक्ति हैं ।
बदल दे हमारे भाग्य की रेखाओं को,
वो ऐसी एक शक्ति हैं ।
भाग्य के सहारे जीने से,
कहीं अच्छा हैं अच्छे करम करना ।
ईश्वर की आराधना से,
कहीं अच्छा हैं सेवा सृष्टि की करना ।
करके आराधना ईश्वर की,
सकून मन का हम पा सकते हैं ।
करके सेवा सृष्टि की
पात्र ईश्वर की कृपा से बन सकते हैं ।
सकून मन का तो मिलेगा ही,
अपना मन भी बदल सकते हो ।
क्योंकि भाग्य की रेखाएँ तो हमारे,
करम से ही तो बनती हैं ।

ऋषिकेश पान्डे
श्री सत्य साई विद्यानिकेतन, नवसारी

चरित्रवान व्यक्ति

नूतन धरा का सृजन हो तो ऐसे,
जीवन में नैराश्य हताशा अवसाद दूर हो तो ऐसे,
कि कोई सत् चरित्र पैदा हो ऐसे,
गांधी, सुभाषचन्द्र हों जैसे,
जिनकी बलिदान गाथा हो विश्व,
वसुधैव कुटुंबकम महिमा के गीत गाता दूर हो तो ऐसे,
जियो और जीने दो की भावना को सीने से लगाए ।
नूतन धरा का सृजन हो तो ऐसे,
बादलों के ऊर विद्युत चमक जाए कोई तो ऐसे,
धरा से जीर्ण क्षीण परंपराँ विध्वंस हो तो ऐसे,
कि कोई मस्कि, लैनिन, लिंकन ऐसे विचारक हो तो ऐसे,
क्रांति के बीज बोए तो ऐसे,
राजतंत्र, तानाशाह, नाज़िज्म का सफाया हो तो ऐसे,
□प्रजा का प्रजा के लिए, प्रजा के द्वारा□, को आगे तो बढ़ाएँ
ऐसी वैचारिक संपदा लेकर तो आएँ ।
नूतन धरा का सृजन हो तो ऐसे,
भू- का घटा टोप तिमिर छँट जाए तो ऐसे,
कि कोई सूर्यस्य मनीषी ऊतर आए जैसे
गीता, कुरान, बाइबल का पाठ पढाएँ तो ऐसे,
कर्म ही पूजा ऐसा ध्येय तो बताएँ ।
नूतन धरा का सृजन हो तो ऐसे,
बिना भेदभाव के चमन में बरसे तो ऐसे
कि कोई चरित्रवान सारथी आए तो जैसे
सबका साथ, सबका विकास नारा जाए तो ऐसे,
सर्व–जन हिताय का संदेश तो पहुँचाएँ ।
नूतन धरा का सृजन हो तो ऐसे,
बुद्ध –महावीर के संस्कारों को बढ़ाए तो ऐसे,
की कोई आस्था का महारथी आए तो ऐसे,
सत्य अहिंसा के मार्ग पर चलकर तो बताए
बुलेट नहीं बैलेट से चलकर पड़ोसी को अपनाए
नूतन धरा का निर्माण हो तो ऐसे ।

निमिषा जैन
ब्राईट. डे. स्कूल वासना, वड़ोदरा

चरित्रवान व्यक्ति

चरित्रवान व्यक्ति होता बडा प्यारा
जिसका दिल सबसे न्यारा ।
जिसका कोई ना अपना
वह दिखाता सबको नया सपना ।
जो अपने लिए कभी न लड़ा
वह दूसरों को नया देने के लिए हमेशा होता खड़ा ।
जो किसी को न देखे दुख में
वह सब को रखे खुश हर कदम पे ।
और जब वह किसी को भी दुख में देखता
वह झट से उसकी मदद करने पहुँच जाता ।
जो रिश्ते निभाने में है अव्वल
उसकी सोच है जैसे खिलता कमल ।
जो झूठ को न माने
वह सच का साथ ही देता ।
जो दूसरों की मदद करता
वह हर किसी के दिल में बसता ।
जो दिखता साधारण और भोला
वह कभी किसी को ना दे सकता धोखा ।
जिसके हृदय में न हो लालच धन का
वह होता कोमल वं चंचल मन का ।
जो नींव की ईट बनकर समाज बनाता
वह जिंदगी में मुस्कुराता ही रहता ।

साव्या सिंह
ब्राईट. डे. स्कूल वासना, वड़ोदरा

चरित्रवान व्यक्ति

जग में होगा चरित्र ऊँचा उसका
जो वचनों के पक्के हैं
और शब्दों में जान हैं ।
चरित्रवान वो हैं
जिसके मन में सेवा का भाव हैं,
और बड़े बूढों के लिए मान हैं ।
बदल – बदल अपना मुखौटा,
न छले जो जग को,
पर चले वो आन से ।
जग में होगा चरित्र ऊँचा, उसका
जो वचनों के पक्के हैं
और शब्दों में जान हैं ।
नेक राह, नेक काम, नेक कर्म
बस मन में यह ध्यान हैं ।
हर मुश्किल डगर में
चाहे जितनी दूर मंजिल
पर चले वो शान से ।
जग में होगा चरित्र ऊँचा उसका
जो वचनों के पक्के हैं
और शब्दों में जान हैं ।
जग में होगा चरित्र ऊँचा
जो आविष्कारों में खो कर न
भूले अपना भान हैं ।
जो समझे मर्यादा और लज्जा की गरिमा,
और करे संस्कृति का सम्मान है।
जग में होगा चरित्र ऊँचा उसका
जो वचनों के पक्के हैं
और शब्दों में जान हैं ।

शैलजा पटेल
ब्राईट. डे. स्कूल वासना, वड़ोदरा

चरित्रवान व्यक्ति राष्ट्र की वास्तविक संपदा

दिल में उठती है पीडा,
देखते है चारों ओर सदा,
मूल्य एवं निष्ठा में पड़ा है गड्ढा,
दूसरों से हम अच्छा करेंगे का वादा,
उभर कर रह गया हैं ज्यादा
लूट रहे सब राष्ट्र की संपदा,
कोई थोड़ा तो कोई ज़्यादा ।

फिर भी खुद को चरित्रवान बताते है,
राष्ट्र के लिए जिंदगी कुरबान करके,
बन के रह गए उनके प्यादा,
फिर भी हम गांधी, सरदार को करके याद,
ढूँढते है उन्हीं में चरित्र उनके बाद ।

जो बन बैठे है राष्ट्र का बोझ,
वो खुद को जताते है देशभक्ति को खोज,
काश चलाते हम उनपे गदा,
और भगा देते उनको सदा ।

मूल्य हर चीज़ की बनाके हमने रखी,
खुद का मूल्य हमने नही देखा,
चरित्र,निष्ठा,सत्य को छोड़कर भाग लेने मेवा,
जिसको सौंपी है राष्ट्र की सेवा ।

विवेकानंद, नेताजी,नेहरू की रखते हैं तस्वीर,
पर बदलते नहीं अपनी तासीर,
चरित्र ही व्यक्ति का है चित्र,
जो कभी नहीं मिटता है मित्र ।

यही है निजी,है संपदा,
जो जीवित रहती है सदा,
भला ऐसे व्यक्तियों से भरा देश देखते है हम कहाँ आज,
चरित्रवान व्यक्तियों से भरा राष्ट्र समृद्ध रहते हैं सदा,
क्योंकि वही है राष्ट्र की वास्तविक संपदा ।

धारना विराडिया
बाईट. डे. स्कूल वासना, वड़ोदरा

चरित्रवान व्यक्ति राष्ट्र की वास्तविक संपदा

चरित्रवान व्यक्ति राष्ट्र की वास्तविक संपदा
आए हैं इस जगह में
लेके एक अंग ईश्वर का
झूठ कभी न बोलते
सत्य को सदा चुनते
देश को न भूलते
उसूलों से चलते ।
चरित्रवान व्यक्ति राष्ट्र की वास्तविक संपदा
मन हैं इनका साफ़ और
कर्म है महानों के
करके विश्व के
कल्याण की कामनाएँ
चरित्रवान व्यक्ति के कर्म
सुधारते हैं संदेश को
ले जाते हैं हर जगह
ऐसे कमाल के कर्म
बनाए स्वर्ग विशाल - सा ।
चरित्रवान व्यक्ति राष्ट्र की वास्तविक संपदा
गरीबों में थे बाँटते
संसार को सँवारते
ऐसे लोगों की संख्या
इतिहास में है ज्यादा
महान आत्मा गांधी की
बड़ा साहस नेहरू का
लोहा बदन सरदार का
और कविताएँ रवीन्द्र की
हज़ारों सैनिकों ने

कुरबान की अपनी जिंदगी
शहीद हुए भगत सिंह
शहीद हुई लक्ष्मीबाई
दिखा गई एक किरण
रोशनी आज़ादी की
बाल गंगाधर तिलक ने
दिखाई झलक स्वराज्य की
ऐसे महान वीरों से
बना ये महान भारत देश
महाभारत , रामायण
हर मोड़ पर कहते है ।
तू बस अभी संभल जा
चरित्रवान व्यक्ति राष्ट्र की वास्तविक संपदा ।
नई किरणें निकलेंगी
तू बस अभी निकल जा
भ्रष्टाचार को मिटा जा
सदाचार का नया संदेश
तू सब तक पहुँचाए जा
चरित्रवान व्यक्ति राष्ट्र की वास्तविक संपदा ।

सिमरन खूबचंदानी
ब्राईट. डे. स्कूल वासना,वड़ोदरा

चरित्रवान व्यक्ति की विशेषताएँ

चरित्र ही है मनुष्य की वास्तविक संपत्ति,
इसके बिना उस पर आ सकती है बड़ी विपत्ति,
चरित्र का मनुष्य में न होना ,
जैसे खुशियों के दरवाज़ों का बंद होना ।
चरित्र से ही बनता है मनुष्य का जीवन गौरवपूर्ण,
चरित्र के बिना रह सकता है मनुष्य का जीवन अपूर्ण,
चरित्रवान व्यक्ति कभी नहीं रहता गरीब,
वह रहता हमारे दिलों के करीब ।
छल-कपट न होना और वचन पालन उसकी पहचान ,
मन में दृढ़ता होती है पर न होता अभिमान,
आँसू न आने देता, रहता निराशा से दूर,
निडरता, प्रसन्नता और जोश से रहता भरपूर ।
सरल हृदय, प्रेम, दया और कोमलता
सभ्य,शिष्ट,विवेक और कुलीनता,
इन सब शास्त्रों से वह मोहे सबका मन,
और कहलाएँ राष्ट्र का वास्तविक धन ।
सत्यवादी,सदाचारी और सिद्धांत पर दृढ़ता,
ऐसा आत्मसम्मानी व्यक्ति रिश्वत के सामने कभी नहीं झुकता ।
इर्ष्या,अभिमान से भरपूर
धनवान व्यक्ति रहते क्रूर
न चिंता देश के मान की,
न उसकी शान की ।
चरित्रवान व्यक्ति की यही पहचान,
करें परिश्रम, बचाएँ देश का मान,
धैर्य, शीतलता से भरे,
ना कभी किसी से डरे ।

निःस्वार्थ होकर वह करें देश की सेवा,
चाहे कार्य कितना भी हो जानलेवा ।
इन्हें चिंता नहीं धन-धान्य की,
बस चिंता है तो देश के मान की ।
चरित्रवान व्यक्ति ही कर सकता है देश की तरक्की
जो अपना फ़ायदा न खोजे, सिर्फ सोचे देश की,
मरते दम तक ले देश का नाम,
इनसे जुड़ी है राष्ट्र की शान ।
आज देश को है ऐसे व्यक्ति की खोज़,
जो बढ़ाए देश को आगे एक कदम हर रोज़ ।
आओ आज हम ले शपथ,
कि दूर रहें हमसे हर कपट,
देश का नाम हम रोशन करेंगे,
और हर मुसीबत में सच्चाई से लडेंगे ।

मुस्कान खोसला
ब्राईट. डे. स्कूल वासना,वड़ोदरा

हिन्दी मेरी पहचान

भारत माँ के दिल में एक शोर सा हो रहा है,
बिना हिन्दी के हिन्दुस्तानी तड़प रहा है ।

बहुत कम लोग याद करते है हिन्दी को,
कहीं एसा तो नहीं, हमारा रिश्ता कमज़ोर हो रहा है ।

हिन्दी है मेरे हिन्द की धड़कन,
यह है सब हिन्दुस्तानियों की सबसे बड़ी पहचान ।

आज के शुभ अवसर पर हम सब करे दृढ़ निश्चय,
हिन्दी के प्रचार, प्रसार में हो हम सबका ध्येय ।

ये सफर लंबा ही सही, मिलते रहेंगे हम,
मेरा विश्वास है कि हिन्दी की नई पहचान,
बनाने में कामयाब होंगे हम क्योंकि हैं हिन्दी हमारी जान ।

बी.एन.बिस्वाल
(प्राचार्य)
श्री सत्य साई विद्यानिकेतन, नवसारी

भारतीय संस्कृति की महिमा

हमारा प्यारा देश महान,
हमारा भारत देश महान ।
जहाँ सूरज सबसे पहले,
खींचते हैं जन-जन का ध्यान,
हमारा प्यारा देश महान ।
जिसके उत्तर में हिमगिरि पर,
प्रभु शंभु लगाते ध्यान,
जहाँ दर्शन कर वैष्णो माता के,
होते सब कार्य महान,
हमारा प्यारा देश महान ।
हमारा भारत देश महान ।
कोयलें नित-नित गाती गीत-
हृदय में भरती सब मानव के प्रीति,
लगाते गंगा में नित ध्यान,
शुद्ध हो जाते जन के प्रान,
हमारा प्यारा देश महान ।
हमारा भारत देश महान ।
रखो तुम अपने मन में ध्यान,
बड़ा सागर से भी है मान,

विश्व का पहला देश महान ।
जहाँ की शान्त हृदय सी झील,
जहाँ का मुख्य धरम है शील,
जहाँ के सन्त फूँकते प्राण,
ज्ञान से होता प्राणी महान,
हमारा प्यारा देश महान,
हमारा भारत देश महान ।
जहाँ पुरूषों में राम महान,
जानकी माता की हैं शान,
कृष्ण की मुरली की है तान,
बुद्ध के वचन मोक्ष के ज्ञान,
प्रभु को सत्-सत् बार प्रणाम-
हमारा भारत देश महान ।
जहाँ गाँधी हैं पिता महान,
राष्ट्र करता सत् कोटि प्रणाम,
भगत सिंह, चंद्रशेखर है शान,
हमारा यही निरन्तर ध्यान,
हमारा प्यारा देश महान,
हमारा भारत देश महान ।

अखिलेश कुमार तिवारी
हिन्दी शिक्षक (माध्यमिक)
श्री सत्य साई विद्यानिकेतन,नवसारी

हिन्दी भाषा का भविष्य

हिन्दी हमारी ललाट की बिंदी है,
हिन्दी हमारा गौरव है,
हमारी आन-बान शान है ।
हिन्दु, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई सबको गले लगाती है,
अनेकता में एकता का सुंदर रुप दिखलाती है,
हिन्दी हमारी माँ है सबको एक डोर में बाँधे रखती है ।
सोने जैसा–चमकीला है अपनी हिन्दी का मुखौटा,
स्वर्ण अक्षरों से लिखी जायेगी इसकी गाथा न्यारी ।
नहीं भूलेगे अपनी न्यारी राष्ट्रभाषा को,
हिन्दी जिंदा थी जिंदा और जिंदा ही रहेगी ।
जय हिंद ।

योगेश.ए.पटेल
हिन्दी शिक्षक - (पूर्व माध्यमिक)
श्री सत्य साई विद्यानिकेतन,नवसारी

श्री सत्य साई विद्यानिकेतन, नवसारी

गणेश वड सिसोद्रा , ने.हां.–८, नवसारी.
(०२६३७) २६५५००, २९१०३०, मो. ९६०१२६१०८५